अन्तरा-शब्दशक्ति

# ममता की छाँव

काव्य संग्रह

एच. एस. अरमों 'अरमान'

# ममता की छाँव

(काव्य संग्रह)


## एच.एस. अरमो 'अरमान'



## अन्तरा- शब्दशक्ति प्रकाशन

**वारासिवनी, मध्यप्रदेश**

ISBN- "978-93-86666-86-4"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय-१५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- एच.एस. अरमो 'अरमान'
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
MAMTA KI CHAVN BY H.S. ARMO 'ARMAN'
वैधानिक चेतावनी-इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| भूमिका | 5 |
| 1. श्री गणेश | 7 |
| 2. माँ शारदा | 8 |
| 3. माँ | 9 |
| 4. ममता की छाँव | 10 |
| 5. महिमा | 11 |
| 6. ममता का आँचल | 12 |
| 7. गहना | 13 |
| 8. बेटी | 14 |
| 9. नारी -महिमा | 15 |
| 10. दहेज-प्रतिशोध | 16 |
| 11. जीवन का गणित | 17 |
| 12. जीवन का गणित | 18 |
| 13. दीपक का अनुराग | 19 |
| 14. भोपाल गैस त्रासदी | 20 |
| 15. अंतस | 21 |
| 16. गुलों का एहसास | 22 |
| 17. पर्वत | 23 |
| 18. नव-प्रकाश | 24 |
| 19. मसीहा | 25 |
| 20. स्वामी विवेकानन्द | 26 |

21. वीर सपूत 27
22. तू परेशाँ क्यों है.....? 28
23. शिक्षक-दिवस 29
24. वक्त की कलम से 30
25. नववर्ष का स्वागत 31
26. अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस 32

# कविता–संग्रह का शीर्षक
# "ममता की छॉव"

## भूमिका

मैने अपनी कविता संग्रह का शीर्षक "ममता की छॉव" ही क्यों रखा है? क्योंकि समाज में अपनी बात पहुँचाने का सशक्त माध्यम कविता ही होती है। जिसे पढ़कर ममता के अभाव में जीने वालों को, जीने की प्रेरणा मिल सकती है। साथ ही विभिन्न शीर्षक से अलग–अलग कवितायें लिखी गई हैं, जिसमें मॉ के रूप में नारी की महिमा और नारी की लज्जा गहना के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है। समाज में व्याप्त जीवन की विभिन्न घटित–घटनाओं को कविता के माध्यम से रूपॉकित की है, जिससे प्रेरणामयी शब्दों के सांग्रह से, समाज को नई दिशा एवं नव–प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास मात्र है। जिस प्रकार ममता की छॉव तले सबको जीने की राह मिल जाती है, उसी प्रकार इस कविता संग्रह में अनेक रंग पिरोये गये हैं।

अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को छंद–मुक्त गद्य के रूप में लिखी सरल शब्दों की कवितायें अवश्य ही पसन्द आयेंगी, क्योंकि "मुझे अपना बना लो" फिर "जरा सोच को बदल के तो देखो", "तू परेशॉ क्यों है", "वक्त की कलम से", "जीवन का गणित", "रिश्ता बनाम रिश्ते" में जोड़कर "मॉ–शारदे" की आराधना करते हुये, शुभ–कार्य का श्री–गणेश हमेशा करके देखो।

कृपया गुणी पाठकजनों के बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं सुझावों का स्वागत है, ताकि मैं अपनी कविताओं के माध्यम से समाज–हित में बेहतर नव–प्रकाश फैला सकूँ।

शुभेच्छाओं का "अरमान" लिये.....

स्थान : रायपुर
दिनॉक: 13 / 03 / 2019

(एच.एस. अरमो)
"अरमान"
रायपुर (छ.ग.)

# भूमिका

मैंने अपनी कविता संग्रह का शीर्षक ममता की छाँव ही क्यों रखा है क्योंकि समाज में अपनी बात रखने का सशक्त माध्यम कविता ही होती है। जिसे पढ़कर ममता के अभाव मे जीने वालों को, जीने की प्रेरणा मिल सकती है। साथ ही विभिन्न शीर्षक से अलग-अलग कवितायें लिखी गई हैं, जिसमें माँ के रुप में नारी की महिमा और नारी की लज्जा गहना के रुप में प्रस्तुत करने का प्रयास है। समाज में व्याप्त जीवन की विभिन्न घटित-घटनाओं को कविता के माध्यम से रूपांकित की है, जिससे प्रेरणामयी शब्दों के संग्रह से, समाज को नई दिशा एवं नव-प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास मात्र है। जिस प्रकार ममता की छाँव तले सबको जीने की राह मिल जाती है, उसी प्रकार इस कविता संग्रह में अनेक रंग पिरोये गये हैं।

अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को छंद-मुक्त गद्य काव्य के रुप में लिखी सरल शब्दों की कवितायें अवश्य ही पसन्द आयेगी, क्योकि मुझे अपना बना लो, फिर जरा सोच को बदल के तो देखो, तू परेशान क्यो है, वक्त की कलम से, जीवन का गणित, रिश्ता बनाम रिश्ते में जुड़कर माँ शारदे की आराधना करते हुये, शुभ-कार्य का श्री-गणेश हमेशा करके देखो।

कृपया गुणी पाठकजनों के बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं सुझावों का स्वागत है, ताकि मैं अपनी कविताओं के माध्यम से समाज-हित में बेहतर नव-प्रकाश फैला सकूँ।

शुभेच्छाओं का अरमान लिये...!

एच.एस. अरमो
अरमान
रायपुर छ.ग.
मो0 न 0 94252-02803

# श्री गणेश

मैं संसार की अनूठी कृति,
पौराणिक दन्त कथाओं में,
हाँ श्री “गणेश”
प्रथम पूजन का हक
मैंने, अपने कृत्यों से है पाया।
मुझ जैसा संसार में कोई न दूजा,
मैं हूँ बुद्धि का प्रदाता,
मेरी सूरत, जैसे भी हो,
पर बुद्धि का,हूँ मैं ज्ञाता।
मेरा उदर है, बड़ा तो क्या हुआ,
हर मुश्किलों को हजम,
असानी से, जो कर जाता।
मेरा शरीर है भारी,
फिर भी वाहन है, मेरा चूहा
है कितना अजूबा,
पर, जगत में, है एक ही नामी।
मैं हूँ सबका दुःख हरता,
सबका मंगलकर्ता मैं हूँ श्री गणेश
सब कामों का, श्रद्धालु के लिये,
करता हूँ, मैं हर दम श्री गणेश।

# माँ शारदे

माँ शारदे तेरे चरणों में करता तेरी वंदना और शत् शत् नमन मेरा।
हे माँ तुम अज्ञानियों में,
तम हर बन, ज्ञान की ज्योति जला दो।
माँ शारदे तेरे चरणों में, करता तेरी वंदना और शत् शत् नमन मेरा
हे माँ!
तुम दीन दुखीयों की कुटिया में, नव प्रकाश का, दीप जला दो।
माँ शारदे तेरे चरणों में करता तेरी वंदना और शत् शत् नमन मेरा
माँ तू ही वीणा वंदिनी
माँ तू ही हंस वाहिनी
तू ही है अक्षरों की ज्ञान माला
मिटा दो अंधकार को कर दो ऐसा, जगत में, उजाला।
माँ शारदे तेरे चरणों में करता तेरी वंदना और शत् शत् नमन मेरा
जन जन में व्याप्त तमसवृति, भ्रष्ट प्रवृति,
अनैतिकता और काम क्रोध की मनोवृति,
उसे दूर करने तुम फैलाओ ऐसा, दिव्य प्रकाश, जगत में,
ताकि, मिट जाये, सदा के लिये ये कुमति, जन जन के मन से।
माँ शारदे तेरे चरणों में करता तेरी वंदना और शत् शत् नमन मेरा
तू ही जगत कल्याणी, तू ही, ज्ञान प्रदाता,
अब, मुझको भी लुटा दो,
अपने दिव्य भण्डार से अमरत्व ज्ञानता
ताकि, समाज के लिये कर सकूँ, हरदम, सेवा भाव की दानता।
माँ शारदे तेरे चरणों में करता तेरी वंदना और शत् शत् नमन मेरा।

# माँ

माँ, तू जननी भी है
और माता तू, पृथ्वी समान
माँ, तू दुःख सहती, सुख देती
कष्टों को, मेरे हरती
फिर भी, हरदम खुशी का एहसास ही कराती।
संतानें सुख की, चाहत में
अलग हो जाते अक्सर माँ से।
वो कैसे, निष्ठुर हैं लोग
जो, बेहिचक, ऐसे कारनामें सहजता से, कर जाते।
आज, इक नारी  जो, पत्नी बन
माँ की ममता का क्यों, खून किया
इक नारी जब माता बन जाती, संतान को जन्मती,
समाज में, प्रतिष्ठा उसकी और अधिक बढ़ जाती।
माँ की नाराजगी होते हैं हँसते जख्म
मन के अन्दर छुपा होता
फिर भी शीतलता अनुरागी भाव
जरा हम तुम, इक बार
मन से, मंथन कर के तो देखें कितना सुकून मिलता है हमें।
माँ सिर्फ, माँ होती है
न इसकी तुलना, किसी से होती है
इसीलिये, ये आदि और अंत होती है
माँ का पर्यावाची, कोई दूसरा नहीं हो सकता।

# ममता की छाँव

मिलती है ममता की छाँव जहाँ, क्यों रुक जाते हैं तुम्हारे पाँव वहाँ।
ममता की गोद, होती जहाँ
शिशु बन, सो जाते है वहाँ
बेफिक्र सुरक्षा की, छाँव है जहाँ
वहीं ठौर, क्यों बनता है  अपना जहाँ।
मिलती है ममता की, छाँव जहाँ, क्यों, रुक जाते हैं तुम्हारे पाँव वहाँ।
उनसे पूछो जो हो गये हैं अनाथ
कभी कोई, हादसे के नाम,
तो कभी, माता पिता के,तलाक के नाम।
कितनी बेजान, बेजुबान हो जाती है
खुशियों की, वो प्यार भरी मुस्कान
पत्थर सी आँखे हो जाती, आँसुओं का दिखता नहीं कोई निशाँ।
मिलती है ममता की छाँव जहाँ, क्यों रुक जाते हैं तुम्हारे पाँव वहाँ।
हे ईश्वर, हे परमेश्वर ममतामयी छाँव मिले, हरदम सभी को
चाहे पल दो पल को ही सही
उसका, दुःखों से भरा जीवन सँवर जायेगा
फिर अनायास ही वह आपसे, जुड़ता चलता चला जायेगा।
और ये होगा वाकया कि  एक शब्द से कई शब्द जुड़ वाक्य बन जायेंगे
और कथा से कहानी और बाद में, कहानियों की एक पूरी किताब
और रहेंगे फिर लोग, आपके आस पास
फिर, बरबस, कह उठोगे कितनी प्यारी है ये ममता की छाँव।
मिलती है ममता की छाँव जहाँ
रुक जाते हैं तुम्हारे पाँव वहाँ। यही है ममता दास्ताँ।

# महिमा

इस जगत में,
नारी, महिमा है कितनी महान
जो, राहों को, नई दिशा में, मोड़ दे
बिछोही को, अपनी ममता से
अपनापन लुटा, फिर से जोड़ दे।
दु:ख सहकर भी,
खुशियों को सदा परिवार में लुटा दे
इस जगत में,
नारी, महिमा है कितनी महान।
ये हैं
पवित्रता की, हृदयाँ चली
ममत्व का है ऐसा एक धाम।
करती है मन की आँखे बयाँ
महिमा है
ऐसी मेरी
मातृभूमि, मैं कह लाँऊ।
सबका बोझ, सबका जीवन, सँवारु मैं
इस जगत में,
नारी, महिमा है कितनी महान।
इसीलिये तो, मैं सदियों से
सृजन की कृतिका हूँ
और माता ममता मातृत्व की
जीती जागती, अद्भुत मिशाल हूँ
इस जगत में, नारी, महिमा है कितनी महान।

# ममता का आँचल

माँ की ममता
मर्ममयी, आचँल का बिछौना
माँ की कोख
जीवन सृष्टि, रचना घर
मैंने पाया, उनसे जीवन अपना
तुम पर, न्यौछावर है मेरा पूरा सपना।
माँ की ममता
मर्ममयी, आचँल का बिछौना
माँ न होती, तो यह सृष्टि न होती
न ही, ममता की परिभाषा होती।
पूछो उनसे  जिनकी माँ बिछुड़ गई
वे तरस रहे ममता की तलाश में,
आँचल तले बिछोह का दर्द लिये
यह इतना, सहकर भी
कैसे हैं दो कदम चल पाते।। ।।
माँ की ममता
मर्ममयी, आचँल का बिछौना
एक माँ, तू है कैसी कोख से जन्मती
लुटा देती अनाथ माँ के भाव को
न जाने क्यों दाग लगाती दामन में,
क्या थी मजबूरी
तुम तो दुनिया को बताती।
माँ, तेरी महिमा है कितनी अदभूत
तेरी गोद में पला बढ़ा,
व तेरे आँचल और हाथों को पकड़ ही
देखा मैंने  ये प्यारा जग संसार।
दुःखों को झेला
सुखों को लुटाया
लुटाती रही, हरदम
मैं तो ममता का सागर।
माँ की ममता
मर्ममयी, आचँल का बिछौना
पर न जाने क्यों?
कुछ लोग माँ का उत्सर्ग भूल रहे हैं
उसे पैसों में तौल रहे है,
परिवार से उसे दूर कर रहे है।
यारों जरा सोचो
चिन्तन  अब समाज में कर के देखो
मेरी माँ तुझे, शत् शत् नमन  आज
तुम, मुझमें समाई हो
और मैं तेरी इक प्यारी परछाई
तुम, मुझसे  होना न कभी जुदा
गढ़ती, तू अनुपम कृति,
इसीलिये माँ, कभी मरा नहीं करती
रहती है, जिन्दा हमेशा
हम तुम में  बनकर आर्शीवाद
माँ तुझे देते हम,
भावभीनी सच्ची श्रृद्धांजलि।

# गहना

नारी का, गहना बिन
तन लागे, अधूरा अधूरा
उसके जीवन में
पति जैसा
हो, कोई प्यारा गहना।
संतानों सा
कितना, अनमोल गहना
परिवार में
खुशहाली का तोहफा
है प्यारा गहना।
मंगल सूत्र,
सतीत्व/नारीत्व का
है प्यारा गहना।
फिर भी, न जाने क्यूँ
लाज है
नारी का
सर्वश्रेष्ठ “गहना“।

# बेटी

मैं हूँ एक सरल, सीधी सी
कन्या कहो या लड़की,
मै हूँ तो आपकी प्यारी बेटी ।
मैं मानव में श्माँ
श्मान मेरी बात,
करती नव सृजन की,
संसार/परिवार में नई कृति।
क्या तुम, मुझे पाकर,
गौरवान्वित हो
मुझे पाकर क्या
वो परिवार भी
वाकिय में,गौरवान्वित है ।
सबका उत्तर, बेटी बोझ नहीं,
सृष्टि की, वो तो
वृद्धि गणक, होती है।
मै हूँ, आपकी प्यारी बेटी
फिर भी
कभी खुशी, कभी गम
क्यों समझ रहे, मुझे
कुछ परिवार के लोग।
मैं हूँ एक सरल, सीधी सी,
आपकी प्यारी बेटी
मुझे खूब पढ़ाओ बढ़ाओ
फिर दूँगी कृति, नवसजृन की।
मैं हूँ एक सरल, सीधी सी,आपकी प्यारी बेटी।

# नारी महिमा

म से माँ और ममता का मातृत्व
जिसको भी, मिल जाय

खुशहाल हो उसका जीवन।
हि  से हिमालय सा भाव बन जाती,
सदैव हितकारणी, महिला ।
ला से लाज का गहना
बन जाती लाजवन्ती
और हो जाती लाड़ की बहना।
दि से दिवारे दिल की
है कोमल दिल से  लुटाती अपनापन
जो, हो जाये इनका
निभाती, उससे रिश्ता जीवन भर।
व से "वामा" याने स्त्री
वरण करती, परिवार का बोझ
काँटों में रहकर
खुशी है, इसकी सोच
वज्रता की देवी
कलुषित का, हो विनाश
वादा विशालता का है, इसका श्रृंगार।
स से सजलता, सौम्यता है
इनका धाम, जिसने खोया
सुख के बदले, दुःख है पाया
समय के साथ महानतम हुये
सुलोचना, सीता, सावित्री, बन गये, इनके नाम।

# दहेज प्रतिशोध

आज की नारी, अब, अबला नहीं,
ज्ञान की, शान की, मान की,
सबलता, पा ली है, आज
ये प्रतिशोध नहीं, सजगता है
मै ही "बहू" मैं ही "बेटी"
मैं ही बनूँगी "सास" कभी।
अब न जला पाओगे, मुझे
मै ही घर की शोभा
मै ही कुल की शोभा
मुझ बिन, नर जीवन अधूरा फिर,
मुझसे ऐसी नफरत क्यों
इसलिये, कहती हूँ
मै मुझे मिटा न सकोगे।
जमाने वालों मुझमें भी, शक्ति है

तुम्हे मिटाने की कुछ करने की
मैं ही नहीं रहूँगी इस जगत में तो,
तुम्हारी उत्पत्ति, कहाँ से हो पायेगी
इसीलिये, समाज से,
बुलंद आवाज मै कहती हूँ
अब न जला पाओगे मुझे कभी भी
वरना, तुम्हारे बेटे, कुँआरें, ही रह
जायेंगे।
ये संसार चक्र का, गति क्रम है,
जैसा तुम सोचते हो,वैसा कभी,
नही हो पायेगा,
इसीलिये, बेटी की, पैदाईश पर ढेरों
खुशियाँ मनाओं  मंगल गीत गाओं।
बेटी को योग्य और शिक्षित बनाओ।
नलायक बेटों से अच्छी सोच, योग्य
बेटियों की होती है,
तभी तो ये मायके और ससुराल रुपी
पहिये की, सशक्त धुरी होती है।
यदि, आज, वक्त रहते
समाज, इस गहराई को समझ लेगा तो
कभी न “बेटी/बहू“ जल पायेगी,
और होगा दहन दहेज रुपी दानव का,
बेटी बहू सा, ज्योतिर्मय प्रकाश रुपी
सृजन की अमृत धारा बहेगी
और समाज में, “दहेज“ की कभी भी
बात न उठेगी।

# नारी अंतस में

क्या है,  छिपा?
मेरा जीवन,
मेरा जन्म
संसार समाज परिवार की दूरी,
फिर भी
जीवन में क्यों रहती
अधूरी की अधूरी।
मुझमें वो सब है,
जो तुम में है
ज्ञान, शक्ति, जीवन कला
धैर्य, ममता, हर कठिनाई को
सहने की, अपार क्षमता।
मेरी बहना,
अपनी अस्मिता को
अपने आप,
कुछ बनने, कुछ पाने की
चाहत में लुटा/मिटा रही है।
जमाने में किसी की भी,
कुछ पाने की चाह
मिटती नही है कभी
“करो, ऐसी चाह (कार्य),
जिसकी खुशबू
मिटती नहीं, है जमाने में कभी।

# जीवन का गणित

जब से मैं चलना, सम्हलना, बोलना सीखी
खुशियाँ थी, खूब ढेरों खिलौने थे, मेरे पास।
जैसे जैसे ऊँचाई बढ़ती गई
खुशियों का, हिसाब हुआ
राहों की दूरी कम हुई
समय की पाबन्दियों ने आ घेरा।
क्योंकि मैं समय की कच्ची डोर जिसे टूटने बिखर जाने का था डर।
ऐसा होता, हमारा जीवन
कहलाती है, समाज परिवार की
एक नारी, बहना, पत्नी और माँ
खुशियाँ होती, दूसरे पल, दर्दों का सैलाब भी।
जिस घर में, पलते बढ़ते, इक दिन, परिभाषित, मायका
जिस घर, विदा हो जाते  हो जाता वह ससुराल

क्या यही है जीवन का गणित।
और उसकी, इक परिभाषा

समाज का गति क्रम निभाती रहना,
अपना संयम न खोना
मैं, आज को, कल और कल को
सदा याद दिलाना चाहती हूँ
इसीलिये, अमिट रचना गढ़ूँगी
ताकि, याद करता रहे ये जमाना।
जीवन का गणित है कितना अजूबा,
पल पल बदलते रहता
फिर भी यह प्रश्न उत्तर के साथ अशेष है, जमाने में उठता रहता हैं।

# दीपक का अनुराग

दीपक का अनुराग देखो तुम
अक्सर, मोह लेता, कीट पतंगो को,
वो दे देते, अपनी जानें,प्रेम उत्सर्ग पानें को।
फिर भी दीपक का अनुराग देखो, तुम
कम न हुआ, मोह अब तक, सदियों से चलते आया,
शमा के खातिर परवाने को, देनी पड़ती आहुति।
फिर भी दीपक का अनुराग देखो, तुम
दीप दीपक से होवें, रोशनी की माला
मानों, छायी अकाष में माला।
दीवाली की खुशियाँ और मिठाईयों में
ईद की सेवईयों में होती, कितनी मिठास झुपी।
फिर भी दीपक का अनुराग देखो, तुम
अमर और अहमद में फर्क नहीं
क्योंकि रोशनी की सबको होती है, चाहत हरदम।
“इसीलिये, दीवाली और ईद,
त्योहार को अपने साथ लायी
खुशियों की फुहार और अम्बार लायी
खुशियों और रोशनी का कोई मजहब, न कोई भेदभाव होता।
ये तो मानव मन की फितरत है
वैमनस्यता की गहरी चाल है
इंसानियत के, तुम दीप जलाओ
सारे जहाँ में, खुशियों का पैगाम लुटाओ।
फिर भी दीपक का अनुराग देखो, तुम
कभी न कम होगा, रौशनी का सैलाब
सदियों से चलते आया है रोशनी फैलाने का अंदाज।

# भोपाल गैस त्रासदी

इस कालिमा रात में सो रहा था सारा जहान
हम भी, सो रहे थे उस रात, उस पल में।
न जाने  दिसम्बर की  कालिमा भरी रात
हम और हमारो के लिये बन गई,
मौत की भयानक काली, मौत का सैलाब।
सिकसकता तड़पता रहा
उस पल, कई, बचपन यौवन
युवक युवती और बुढ़ापा।
कई कदम जिन्दगी की लालसा की तलाश में
आगे ही बढ़ते रहे,
पर साँसे, न जाने उनसे अपनों से रुठकर क्यों
सदा के लिये दूर होती ही गई?
और इक दास्ताँ लिख गई
इतिहास के पन्नो में रक्त भरी, मौत की स्याही से।
वो दर्द दर्दो का सैलाब,
ढो रहे, लाखो दर्द के शिकार अब भी,
आओ, अपनी संवेदनात्मक भावना का,
हमदर्द मलहम, उनके नासूर घावों मे,
जरा हम भी लगा तो आये यारो।
आओ इक श्रद्वा सुमन
उनके कब्र पर चढ़ा आये यारों
खुदा ने,उनको जिन्दगी तो दी थी उन्हे भी यारों
पर, काल के सामने थे, वे कितने बेबस और मजबूर।।

# अंतस

जरा सोच को बदल के तो देखो
मेरे अन्तस में, पीर बहुत है,
पर बाहर निकालूँ कैसे
इसीलिये कहता हूँ यारों जरा सोच को बदल के तो देखो।
जैसे तालाब की मिट्टी
तालाब में दलदल और कीचड़ ही कहलाती,
किन्तु कुम्हार के हाथों,
वही मिट्टी मूल्यवान और मानव उपयोगी हो जाती
इसीलिये कहता हूँ मेरे यारों  जरा सोच को बदल के तो देखो।
अक्सर नदियों का उद्गम होता पहाड़ो से,
पहाड़ो से गिरकर, वे झरना बन जाते
मैदानों में जाकर, विशालता पाते
उसके किनारे नगर है बसते
और मंदिरो का, निर्माण होते जाते
जहाँ पाषाण और नदियाँ एक साथ पूजे जाते
इसीलिये कहता हूँ मैं यारों जरा सोच को बदल के तो देखो।
क्या लगोटी लगाने वाला, मानव नहीं
क्या जंगल में रहने वाला इन्सान नहीं
जीने के लिये, अपनी शैली में सब जीते हैं
इन्हें बदलने की सोच में, तुम अपनी जरा सोच को बदल के तो देखो।
गरीब हो या अमीर
उसमें इंसानियत की शक्ल देखो
अपने अंतस में तुम एक बार निहार के देखों
फिर, अपने आप, आपकी सोच बदल जाएगी
इसीलिये कहता है “अरमान" जरा अपनी सोच को बदल कर तो देखों।

# गुलों का एहसास

गुलशन के महकते गुलों ने
जीने का एहसास कराया है,

वरना जिन्दगी वीरान हुए जा रही थी।
मैं, एक सूखा दरख्त था,
जिस पर, सिर्फ चील, कौंवे, बाज, उल्लू
कभी कभी, बैठ जाते थे,
मेरी टहनी, उनके बोझ से,
टूटती जाती थी,
पर, मुझे, महकते गुलों ने, जीने का एहसास कराया।
इसीलिये अरमान कह रहा आपसे
गुल गुलशन गुलफाम की तरह
जीने का अंदाज बयाँ करोगे,
सदा महकते, सदा पूजते रहोगे
ऐसे ही लोग हरदम तुम्हे याद किया करेंगे।
जिन्दगी में अपनी खुशबू
अपने लिये, जीने से,
कभी नहीं फैलती,
गर, किसी गिरते को,
दोगे अगर सहारा
इक पल भी करोगे ऐसा कारनामा,
तो सँवर जाती है,
अक्सर बोझिल जिन्दगी भी,
खुशियाँ, तुममें, भी छिपी है
इक बार, दिल से गुलो का एहसास मन में बसा के तो देखो।

# मुझे अपना बना लो

मै पर्वत हूँ अडिग,
पर तुम्हारी, तरह नहीं।
मै वृक्ष हूँ तनकर खड़ा
पर, तुम्हारी तरह नहीं।
मुझे अपना बना लो  तुम
पर्वत और वृक्ष की प्रकृति
देते हमको, जीवन सीख।
सरिता से हमेशा बहानें विचारों का
मेघों से उल्लास लुटाने का
घरों से, सुरक्षा पाने का
दोस्तों से, सहयोग पाने का।
मुझको अपना बना लो तुम
इक शब्द, इक नाम दे दो मुझे
जीने का इक अंदाज दे दो
जीवन को इक साँस दे दो
मै पवन हूँ इक नई राह दे दो
कहते मुझे सब समय का पल है,
तुम पल दो पल साथ दे दो।
मुझे अपना बना लो तुम
सुनहरा होगा, सपना तुम्हारा
समय को सहेजने का नया अंदाज दे दो
इस दिल से, उठ रही इक यूँ ही आवाज
मुझे अपना बना लो तुम।

# नव प्रकाश

जीवन सरिता में,
कैसा छाया है  भय का आतंक

हर पल, मौत का खौफ
अनेका नेक, घटनाओं का देखा है सच
बीते कुछ दुःखद सुखद पलो में
आया तम हर प्रकाश का नया सबेरा।
आया गया देखो
नव पल्लवित, आशाओं की कलियाँ
नव वर्ष की देहरी में
प्रस्फुटित होने की,
व्याकुलता लिये
हसरत भरी नजरों से
पर, जीवन सरिता में
कैसा छाया है भय का आतंक ये कैसे पल हैं।
फैलायें हम सब मिलकर
शांति, प्रगति विकास का पैगाम
समभाव का निर्मित करें वातावरण
यही सोच है,
हर राष्ट्र प्रेमी की
ऐसी आशाओं के पुष्प
बिखरते रहे इस वातावरण में
यही मंगल कामना,
कर रहा “अरमान” आपसे,
नव वर्ष, नव प्रकाश के शुभागमन,की दस्तक पर।

# मसीहा

ऐसा भी इक वक्त आता,
दर्दों को, जो इन्सान,
चुपचाप पी जाता,
वो सभी का,
मसीहा बन जाता है।
वैसे ही थे इक “ईसा मसीह”
काँटो से भरी,
थी, उनकी सेज और ताज,
हुकूमत की आँखों में,
बन गये थे, नासूर काँटा।
उन्हे शासक ने चढ़ा के सलीब में,
दे दी मौत की निशानी,
पर, मारने वाला, नादान था,
क्योंकि यहाँ तो मरने वाला मरकर भी
उतना ही हुआ, अजर अमर।
सारे विश्व में अनेकों का मसीहा
और तो लोगो में प्रभु परमेश्वर,
दयावान बनकर छाया।
आओं हर  दिसम्बर को,
उन्हें याद करें,
अपने श्रद्धा के, सुमन अर्पित करें समभाव में,
प्रेमभाव अर्पण करें,
हे प्रभु परमेश्वर, तुम बने उनके मसीहा
तुम्हे करते है,वे शत शत नमन।

# स्वामी विवेकानन्द

सुनामी, कहर की लहर
मेरी स्मृतियों की लहर,
तरोताजा करने,
सागर की लहरो से,
मेरी स्मृति स्थल को,
इक बार फिर स्पर्श कर गया,
यह अद्भूत घटना ने, पुनः नवयुवको को, कुछ प्रेरणा पुष्प दे गई।।।
मेरा था बचपन ऐसा
डर लगता था बन्दरो से
पर, समय पल ने,
कुछ और ही लिखा था
शिक्षा दीक्षा और सद पुरुषों का संग,
दे गया मेरे युवा जीवन में अदभूत चमत्कारिक रंग।
सारे संसार में,भारत की बनकर पहचान,
शून्य पर टिका है सारा संसार,
शून्य ही सब अंको में महान शून्य का है कैसा चमत्कार।
उतना दिव्य और महान
नये युग में चारित्रिक नैतिकता का दर्शन
देकर, अल्प आयु में ही स्वर्ग सिधारे,
वक्त का किया, ऐसा सदुपयोग
मर कर भी, हुये अजर अमर,
युवा शक्ति, उनकी याद में मनाते हैं हर 12 जनवरी को युवा दिवस।

# वीर सपूत

कह दिया, रण बाँकुर ने अपनी जुबाँ से
तुम मुझे खून दो
मै तुम्हें आजादी दिलाऊँगा।
था जोश भारी आजाद हिन्द की भुजाओं में
बनाकर दिखया आजाद हिन्द फौज की कमान।
खूने जोश होता है, जिसमें,
“सुभाष” जैसे चन्द्र बन शीतलता के बदले
यारो अक्सर देशभक्ति के खातिर,
लोगों में गर्मजोशी का जोश जगाते।
इरादों के, थे वो पक्के,
दूसरो को, नाकाम करते रहे, अक्सर।
उनकी जिन्दगी में आया, इक ऐसा मोड़
विमान दुर्घटना ने दे दी, गुमनामी जिन्दगी,
पर औरो के लिये, जिन्दा है।
ऐसी उनके मन की अभिलाषा है
वैसे भी, शहीद जवान,कभी भी मरता नहीं,
इतिहास की इबारत में,रहो तुम सदा अजर अमर,
इस मातृभूमि में
ये वतन करता रहेगा, तुम्हे सदा याद
और कह रहा हूँ मैं “जय हिन्द जय हिन्द“।

# तू परेशाँ क्यों है?

हे पथिक, तू आगे बढ़
निरन्तर चलता चल
चाहे बोये तेरे राह में कोई काँटा,
तो भी बच निकल, तू आगे बढ़ता ही चल।
तू परेशाँ क्यों है
तेरे साथ, तेरे साहस की दौलत है
तेरा हम साया, हरदम, तेरे साथ है
विश्वास की, डोर की, परख करता चल
स्व मूल्याँकन के पृष्ठ पढ़ता चल।
हल है हर परेशाँ का
किसी के सामने, अपने मन की बात तो रख
कोई तो अपना होगा, कोई तो साथ देगा तुझको
फिर भी तू परेशाँ क्यों है।
अपने आत्म ज्ञान आत्मबल का सहारा ले
हर मुश्किलों का हल होगा,
तेरे चेहरे से परेशाँ की लकीर मिट जायेगी
समझ में  एक बात अवश्य आयेगी।
निराश होने किस्मत को दोष देने से
कोई बात बनती नहीं है
सिर्फ  हरदम प्रयासरत रहने से
हर परेशानी का हल है निकलता
इसीलिए अरमान कहता है आपसे
हे पथिक, तू आगे बढ़  तू परेशाँ क्यो है।

# कर लो उनको याद

कर लो तुम उनको ह्रदय से याद,
अंधकार में जिसने रोशनी दिखायी वह सृजनकार सिर्फ आप हैं।
मुझे पढना, बढ़ना, ज्ञान सिखाया आपने,
वरना अज्ञानी रह जाता, इस संसार में,
आज इस काबिल हूँ आपके बदौलत,
इस ऋण को, सौ जन्मों में भी, चुका न पाउँगा।
हे गुरुवर, करता तुझको शत् शत् नमन
निःस्वार्थ शिक्षा का, बीज ऐसा तुमने बोया हममें,
तुमने धनेरी छाया, अमृत फल भी, उससे पाया,
पर, तुम दूर हो, अब तक, उसकी छाँव से,
और वो अमृत फल भी, चख नहीं पाया,
ऐसा किया ज्ञान का, तुमने अक्षय दान।
हे गुरुवर, करता तुमको शत् शत् नमन
गुरु भक्ति का, जगत में,
मिले जिसे सच्चा प्रसाद
जीवन की डगर में, बढ़ता रहे सतत ये संवाद।
यही अमृत कण दुवाओं का लुटाया था सब में आपने,
अमर रहे कृत्यों के, ये अनमोल खजाने।
ज्ञान ज्योति प्रखरित हो अनवरत,
यही श्रद्धा सुमन अर्पित है,
तुमको,आपकी महानता के नाम
हे गुरुवर, करता तुमको शत् शत् नमन
हे गुरुवर, करता तुमको हाथ जोड़ ह्रदय से नमन।

# वक्त की कलम से

सुनहरे सपनों के खातिर नई सुबह की किरणें देखी थी,
हर पल खुश हो और बढते रहें भी आगे,
हुआ विकास तो, कुछ विनाश भी।
सुनहरे सपनो के खातिर नई सुबह की किरणें देखी थी

मान लिये ये, नियती का मिजाज है,
कहीं धूप तो कहीं छाँव अवसाद है
कहीं खुशी तो कहीं गम है।
उस पल गुजरात की और बात है,
ढ़ेरों खुशियों की फैली, वहाँ बिसात है
मोदी के हाथों में है अब मोदक के लड्डू
हौसले से जीती जाती है जंग कहावत हुयी है चरितार्थ आज के संग।
सुनहरे सपनों के खातिर नई सुबह की किरणे देखी थी
वर्ष हौले हौले बीत रहा है राज्य में छाया, नक्सलवाद का कहर है
वीर जवानों ने दे दी कत्र्तव्य के खातिर शहादत।
पर हुयी माँ की गोद सूनी,विधवा के आँसू की बहती धारा
बाबू कब आओगे नोनी कैसे पुकारे,
वो गाँव दे रहा उनको अंतिम बिदाई
बंद आँखों से उन्होने अपने कर्तव्य की बात पुनः दोहराई।
सुनहरे सपनो के खातिर नई सुबह की किरणे देखी थी
वक्त की कलम से, स्याही सूखती नहीं
समय की धारा, उसे सतत बहने की स्फूर्ति देती,
इसीलिये तो, ये अभिव्यक्ति तुम तक आयी है
शायद तुम्हारे मन में भी होगे कुछ गुबार
उसे बाहर तो लाकर देखो
कर रहा वक्त इंतजार, अपनी तुम कलम जो उठाकर देखो।

# नववर्ष का स्वागत

नव वर्ष का, ह्रदय मन से, करें स्वागत।
विगत को छोड़, आगत की सोचें
बीत गये कुछ, अवसाद और दहशत के पल,
खोये, हमने भी अपने और पराये,
फिर भी देखा हमने मुसीबत में, राष्ट्र की जनता को एक जुट होते।
प्रगति और विकास की हसरतें लेकर आया है ये नववर्ष
दहशत के वातावरण में फिर भी ढूंढ़ लिया, हम सबने खुशियों के पल।
आओं बाँटे खुशियाँ  और नव सजृन की बातें,
कौम जमात से हटकर, एकजुट रहने की बातें,

देखों तभी तो हर मुसीबत हो जाती पल में दूर
साहस होता नहीं, फिर भी कम
और, सारे गमों को, फिर भी सह लेते उन दर्दो के नाम।
कल का छूटा, अधूरा सपना ये अरमान कर लेना तुम भी पूरा
वरना बुझते रहोगे, उस पल को और डूब जाओगे, उस पल के अवसादों के नाम,
करो तुम भी थोड़ा सा प्रयास लिखो, इक नई इबारत, समय के नाम।
आओं फिर से दोहरायें नव वर्ष ले आया है ढेरों सौगातें
सिर्फ चुनना है हमें क्या करना है और क्या है हमारा लक्ष्य,
हर काम में, तो होती हैं, चुनौतियाँ पर घबराना मत आलोचनाओं से
यही आलोचनायें ही अक्सर रखती हैं सशक्त बुनियादें।
एंजिन बन सदा तुम आगे बढ़ते रहना
हर दर्द के साथ, सुख के पल भी जुड़े होते है
हर रात के बाद आती है ऐसा ही, पल लेकर आया है, ये नववर्ष।
मेरी यही अभिलाषा है सुख शांति बनी रहें राष्ट्र में
हमारा भी, हो योगदान, अमन की शांति में।

# अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस

मैं, अपने परिवार की, इक मजबूत नींव हूँ
आज, समय के साथ, पलकर बन गया हूँ वट वृक्ष
और परिवार रुपी, फैली शाखायें
फिर, क्यों आज, बुजुर्ग आँखे है,बेबस और इतनी लाचार।

अक्सर, जीवित, संतानों के रहते, अनाथों की तरह हो जाते बुजुर्ग
आज, नैतिकता, सामाजिकता का,
कहाँ हो रहा है पतन,जरा सोचकर देखो तो यारों।

जीवन के सफर में वृद्ध हैं, परिवार की शान,
हैं, अनुभव के अनमोल खजाने,
जब उनसे मिलते है हमें तजुर्बे के लाभ हम हो जाते कितने लाभालाभ।

किन्तु वृद्ध होते, परिवार के पके आम,
नई पीढ़ी, करके, इनकी सच्ची सेवा पा जाते है,
परम कत्तवर्य परायणता का पवित्र धाम।

वृद्धों की आदतों में अक्सर आ जाता है बचपना
हो जाते कभी मंद बुद्धि तो कभी बहरे और जिद्दी,
और करते अजीबों गरीब सी हरकत,
फिर भी, इतना सब कुछ सहकर भी,
ह्रदय मन से, सेवा सुश्रुशा करना होगा,
यही मानवता, सामाजिकता, नैतिकता और संस्कार का अनमोल संदेश है।

# व्यक्तित्व दर्पण

नाम - एच.एस. अरमो 'अरमान'

जन्म - 23 जुलाई 1959

जन्मस्थान - ग्राम खजरा, पोस्ट गढ़ी, तह. बैहर, जिला बालाघाट

शिक्षा - एम.कॉम

पता - क्वा. नं. एफ/7, आवासीय परिसर, शास. कन्या पॉलीटेकनिक, बैरन बाजार, रायपुर (छ.ग.) 492001।

ई मेल - himmatsinghmom@gmail.com

मो. - 9425202803

प्रकाशन - तकनीकी शिक्षा पाठ्यपुस्तक (हिन्दी में, पॉलीटेक्निक हेतु)

सम्मान 'व्यक्तित्व विकास एवं निखार' - म.प्र. हिन्दी अकादमी भोपाल (म.प्र.) से वर्ष 1997 में प्रकाशित। मासिक पत्रिकाओं में कविता एवं आलेखों का प्रकाशन शोध पत्र का प्रकाशन।

- वर्ष 2001-02 हेतु ए.आई.सी.टी., नई दिल्ली द्वारा तकनीकी हिन्दी पाठ्य पुस्तक लेखन हेतु व्यक्तित्व विकास एवं निखार पाठ्य पुस्तक को द्वितीय पुरस्कार हेतु चयनित एवं सम्मान पत्र 31000/- राशि के साथ सम्मानित किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य की सामाजिक संस्थाओं एवं साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सामाजिक सेवा हेतु एवं साहित्यिक सेवा के लिए सम्मानित किया है। जैसे भारतीय दलित साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ शाखा धमतरी आदि संस्थाओं द्वारा एवं राष्ट्रीय स्तर पर डॉ. आम्बेडकर फेलोसीप नेशनल अवार्ड 2012 भारतीय दलित साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त एवं सामाजिक सेवा संस्था इंडियन सौलीडेटीक काउन्सील नई दिल्ली द्वारा इंटरनेशनल एजुकेशन एक्सीलेंट अवार्ड (दुबई 2013)

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-86-4
मूल्य- 60/-